<u>स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन</u>

निबंध का सार / प्रतिपाद्य / विचार

यह निबंध जिस समय लिखा गया, उस समय भारत में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। कुछ ऐसे लोग थे, जो स्त्री शिक्षा को परिवार के नाश के रूप में देखते थे। द्विवेदी जी ने इस निबंध के माध्यम से इस सोच का विरोध किया। उन्होंने इसके लिए भारतीय धर्मग्रंथ के अंदर वर्णित पात्रों तथा महाविभूतियों का उदाहरण दिया। उनके अनुसार अत्रि ऋषि की पत्नी, सीता, शकुंतला, रुक्मिणी, मंडन मिश्र की पत्नी इत्यादि शिक्षित थीं। अतः हमें चाहिए कि स्त्रियों को शिक्षा देने का प्रयास करें। इसके लिए हम चाहें, तो शिक्षा पद्धति में आवश्यक बदलाव कर सकते हैं। हमें उनके लिए शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए।

लेखक द्वारा दिए गए तर्क जो स्त्री शिक्षा के समर्थन में कहे गए

- स्त्री शिक्षा से परिवार का नाश नहीं होता।
- स्त्रियों ने भी पद्य रचना तथा वेद-मंत्रों की रचना की थीं।
- स्त्री यदि अशिक्षित रहती हैं, तो हमारा समाज भी विकास नहीं कर पाएगा।
- प्राचीन भारत के इतिहास और धर्मग्रंथों में स्त्री शिक्षा के विरोध में कुछ नहीं कहा गया है।
- अत्रि ऋषि की पत्नी, सीता, शकुंतला, रुक्मिणी, मंडन मिश्र की पत्नी इत्यादि इस बात का उदाहरण हैं कि स्त्रियाँ उस समय भी शिक्षा ग्रहण करती थीं।

निबंध का उद्देश्य

- हमें पुरानी रूढ़ियों तथा परंपराओं का विरोध करना चाहिए क्योंकि इनसे विकास का मार्ग बाधित होता है।
- उन्नति तथा विकास पाने का अधिकार मात्र पुरुषों को नहीं है। स्त्रियों को भी समान अधिकार मिलने चाहिए।
- हमें किसी भी बात को आँख बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए। हमें अच्छी तरह से जाँच-परख कर ही उसे स्वीकार करना चाहिए।

निबंध से मिलने वाला संदेश / शिक्षाएँ

- स्त्रियों को शिक्षा देने का संदेश।
- अपनी संकीर्ण विचारधारा को बदलने का संदेश।
- स्त्री शिक्षा से परिवार का नाश नहीं होने का संदेश।

ISC COACHING CENTRE